दैवमेव हि नृणां वृद्धौ क्षये कारणम् (भाग्य ही मनुष्य की उन्नति तथा अवनति का कारण है)।

सप्तमी विभक्ति स्थान का बोध कराती है, परन्तु अनेक स्थलों पर सप्तमी उस वस्तु या पात्र में भी प्रयुक्त होती है, जिसको कोई चीज दी जाती है या सुपुर्द की जाती है, यथा-

योग्यसचिवे न्यस्तः समस्तो भरः (योग्य मन्त्री के ऊपर समस्त भार सौंप दिया)।

शुकनासनाम्नि मन्त्रिणि राज्यभारमारोप्य स यौवनसुखमनुबभूव (राज्य का भार योग्यमन्त्री शुकनास को सौंपकर वह यौवन का सुख भोगने लगा)।

वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे (गुरु जिस प्रकार से चतुर शिष्य को विद्या प्रदान करता है, उसी प्रकार मूढ़ को भी)।

'फेकना' या 'किसी पर झपटना' अर्थ का बोध कराने वाली √क्षिप्, √मुच्, √अस् धातुओं के योग में जिस पर कोई चीज फेंकी जाती है या झपटती है वह सप्तमी में रखा जाता है, यथा-

मृगेषु शरान् मुमुक्षोः (हरिणों पर बाण छोड़ने की रवा रखने वाला)।

न खलु बाणः सन्निपात्योऽस्मिन् मृगशरीरे ।

सम्बोधन

किसी को पुकार कर अपनी ओर आकृष्ट करने को सम्बोधन कहते हैं। सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है और सम्बोधनवाचक शब्द के पूर्व भोः, अये, हे आदि चिह्न लगते हैं। सर्वनाम शब्दों का सम्बोधन नहीं होता और अकारान्त शब्दों के एकवचन में विसर्ग नहीं होता। आकारान्त और इकारान्त शब्दों के प्रथमा के एकवचन में ए (हे लते, हे हरे) और ईकारान्त शब्द के प्रथमा के एकवचन में 'इ' (हे नदि) और उकारान्त शब्द के 'ओ (हे साधो) हो जाता है।